कृषि नवाचार

ISSN: 3048-6092
https://www.krishinavachar.in
खण्ड 03 भाग 01 अप्रैल, 2026

महिला सशक्तिकरण और ग्रामीण विकास में बैकयार्ड पोल्ट्री फार्मिंग का महत्व

करुणेश कुमार दूबे[1], मान्या पाण्डे[2], छाया मिश्रा[2] और सुबेदार सिंह[3*]

[1]सहायक प्राध्यापक, श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज, गोण्डा, उत्तर प्रदेश

[2]बी.एस-सी (एग्री.) ऑनर्स, श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज, गोण्डा, उत्तर प्रदेश

[3]सहायक प्राध्यापक मंदसौर विश्वविद्यालय, मंदसौर, मध्य प्रदेश

***E-mail: subedarsingh4587@gmail.com**

परिचय

बैकयार्ड पोल्ट्री फार्मिंग घर के आसपास मुर्गी पालन की एक सरल और उपयोगी विधि है। इसमें किसान या भूमिहीन परिवार आसानी से मुर्गियों का पालन कर सकते हैं। इस पद्धति में अधिक पूंजी निवेश की आवश्यकता नहीं होती, जिससे यह सभी के लिए सुलभ बनती है। मुर्गियों को घर के बचे-खुचे भोजन और प्राकृतिक संसाधनों से पाला जा सकता है। यह अंडे और मांस उत्पादन का सस्ता और प्रभावी साधन है। इससे परिवार की पोषण आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। अतिरिक्त अंडे और मांस बेचकर आय भी बढ़ाई जा सकती है। यह ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार का अच्छा विकल्प प्रदान करता है। इसमें कम जगह और कम देखभाल की जरूरत होती है। इसलिए बैकयार्ड पोल्ट्री फार्मिंग एक लाभकारी और उपयोगी व्यवसाय है।

पोषण सुरक्षा में योगदान

बैकयार्ड पोल्ट्री फार्मिंग पोषण सुरक्षा में महत्वपूर्ण योगदान देती है। इसके माध्यम से परिवारों को ताजे और पौष्टिक अंडे तथा मांस आसानी से उपलब्ध होते हैं, जो प्रोटीन, विटामिन और खनिजों के अच्छे स्रोत हैं। यह खासकर ग्रामीण और गरीब परिवारों के लिए संतुलित आहार सुनिश्चित करने में सहायक है। बच्चों, गर्भवती महिलाओं और बुजुर्गों के पोषण स्तर को सुधारने में भी इसका बड़ा योगदान होता है। इस प्रकार, बैकयार्ड पोल्ट्री फार्मिंग कुपोषण को कम करने और स्वस्थ जीवन को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

कम लागत एवं प्राकृतिक आहार व्यवस्था

बैकयार्ड पोल्ट्री फार्मिंग में कम लागत और प्राकृतिक आहार व्यवस्था इसकी एक बड़ी विशेषता है। इसमें मुर्गियों के पालन के लिए अधिक निवेश की आवश्यकता नहीं होती, जिससे यह छोटे और सीमांत किसानों के लिए उपयुक्त है। मुर्गियां अपने आसपास उपलब्ध अनाज के दाने, कीड़े-मकोड़े, घास और रसोई के बचे हुए भोजन से अपना पोषण प्राप्त कर लेती हैं। इससे महंगे तैयार चारे पर निर्भरता कम हो जाती है। इस प्रकार, कम खर्च में मुर्गियों का पालन संभव होता है और किसानों को अच्छा लाभ मिल सकता है।

आम के बगीचों में उपयोगिता

आम के बगीचों में बैकयार्ड पोल्ट्री फार्मिंग की उपयोगिता बहुत महत्वपूर्ण है। मुर्गियां बगीचे में घूमकर कीड़े-मकोड़ों और हानिकारक कीटों को खा जाती हैं, जिससे फसलों को नुकसान कम होता है। इससे रासायनिक कीटनाशकों के उपयोग की आवश्यकता भी घटती है। मुर्गियों का मल बगीचे के लिए प्राकृतिक खाद का काम करता है, जिससे मिट्टी की उर्वरता बढ़ती है। इसके अलावा, मुर्गियां जमीन को हल्का खोदकर मिट्टी को भुरभुरी बनाती हैं, जिससे पेड़ों की जड़ों को लाभ मिलता है। इस प्रकार, आम के बगीचों में मुर्गी पालन से उत्पादन बढ़ाने और लागत कम करने में मदद मिलती है। आम के बगीचे में पालन करने पर मुर्गियाँ हानिकारक कीटों के लार्वा एवं प्यूपा खा लेती हैं, जैसे: मैंगो हॉपर, फुदका और स्टेम बोरर।

उपयुक्त नस्लें

बैकयार्ड पोल्ट्री फार्मिंग के लिए उपयुक्त नस्लों का चयन बहुत महत्वपूर्ण होता है। ऐसी नस्लें चुनी जाती हैं जो स्थानीय जलवायु के अनुकूल हों और कम देखभाल में अच्छी उत्पादन क्षमता दें। देसी (स्थानीय) मुर्गियां अधिक सहनशील होती हैं और बीमारियों के प्रति प्रतिरोधक क्षमता रखती हैं। इसके अलावा उन्नत नस्लें जैसे ग्रामप्रिया, वनराजा, कड़कनाथ आदि भी बैकयार्ड पालन के लिए उपयुक्त मानी जाती हैं, क्योंकि ये अंडे और मांस दोनों के लिए अच्छी होती हैं। सही नस्ल का चयन करने से उत्पादन बढ़ता है और किसानों को अधिक लाभ मिलता है। बैकयार्ड पोल्ट्री हेतु प्रमुख देशी/उन्नत नस्लें- ग्राम प्रिया, कड़कनाथ, बनराजा, कैरी उपकारी और कैरी निर्भीक आदि हैं।

विशेषताएँ

बैकयार्ड पोल्ट्री की इन विशेषताओं के कारण यह प्रणाली काफी लाभकारी मानी जाती है। अच्छी नस्ल की मुर्गियां लगभग 160 अंडे प्रति वर्ष तक उत्पादन कर सकती हैं, जिससे परिवार को

नियमित रूप से पौष्टिक आहार मिलता है और अतिरिक्त आय का भी स्रोत बनता है। इनमें रोग प्रतिरोधक क्षमता अधिक होती है, जिससे ये स्थानीय वातावरण में आसानी से जीवित रहती हैं और बीमारियों का खतरा कम होता है। साथ ही, ये मुर्गियां सतर्क और फुर्तीली होती हैं, जिससे वे शिकारी जानवरों से खुद को बचाने में सक्षम रहती हैं। इन गुणों के कारण बैकयार्ड पोल्ट्री छोटे किसानों के लिए एक सुरक्षित और टिकाऊ विकल्प बन जाती है।

उत्तर प्रदेश में अंडा उत्पादन की स्थिति

उत्तर प्रदेश में अंडा उत्पादन की स्थिति लगातार सुधार की ओर बढ़ रही है। राज्य में पोल्ट्री क्षेत्र का धीरे-धीरे विस्तार हो रहा है, जिससे अंडा उत्पादन में वृद्धि देखी जा रही है। हालांकि, राष्ट्रीय स्तर पर उत्तर प्रदेश शीर्ष अंडा उत्पादक राज्यों में शामिल नहीं है, फिर भी इसका योगदान लगातार बढ़ रहा है। भारत में कुल अंडा उत्पादन वर्ष 2023-24 में लगभग 142.77 बिलियन तथा 2024-25 में लगभग 149 बिलियन होने का अनुमान है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि देश में इस क्षेत्र का तेजी से विकास हो रहा है। उत्तर प्रदेश में अंडा उत्पादन मुख्य रूप से छोटे किसानों और बैकयार्ड पोल्ट्री पर आधारित है। सरकार द्वारा पशुपालन और पोल्ट्री विकास से जुड़ी विभिन्न योजनाओं के माध्यम से इस क्षेत्र को बढ़ावा दिया जा रहा है। राज्य के कुछ जिलों जैसे सहारनपुर, गोरखपुर और देवरिया में अंडा उत्पादन अपेक्षाकृत अधिक पाया जाता है। हाल के वर्षों में बेहतर नस्लों, पोषण प्रबंधन और जागरूकता के कारण उत्पादन में वृद्धि हुई है। साथ ही, अंडों की बढ़ती मांग, पोषण जागरूकता और बाजार उपलब्धता भी इस क्षेत्र के विकास में सहायक हैं। इस प्रकार, उत्तर प्रदेश में अंडा उत्पादन अभी मध्यम स्तर पर है, लेकिन इसमें तेजी से वृद्धि की संभावनाएं मौजूद हैं और भविष्य में यह राज्य पोल्ट्री उत्पादन के क्षेत्र में और अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। राज्य में प्रतिदिन लगभग 3.50 करोड़ अंडों की खपत एवं उत्पादन लगभग 2 करोड़ अंडे/दिन हैं। अंडा उत्पादन में उत्तर प्रदेश का 8वाँ स्थान हैं, जिसमे हमे प्रति व्यक्ति अंडा उपलब्धता 2018-19 में 79 अंडे/वर्ष तथा 2024-25: 106 अंडे/वर्ष थी। ICMR की अनुशंसा 180 अंडे/व्यक्ति/वर्ष की गई हैं।

राष्ट्रीय स्तर पर योगदान

राष्ट्रीय स्तर पर अंडा उत्पादन में पोल्ट्री क्षेत्र का महत्वपूर्ण योगदान है। भारत विश्व के प्रमुख अंडा उत्पादक देशों में शामिल है और कुल उत्पादन में लगातार वृद्धि हो रही है। इस वृद्धि में छोटे किसानों, बैकयार्ड पोल्ट्री और व्यावसायिक पोल्ट्री फार्मिंग का बड़ा योगदान है। देश में अंडों की बढ़ती मांग, पोषण के प्रति जागरूकता और सरकारी योजनाओं के कारण उत्पादन में निरंतर सुधार हो रहा है। विभिन्न राज्यों द्वारा बेहतर नस्लों और आधुनिक तकनीकों को अपनाने से राष्ट्रीय उत्पादन को मजबूती मिल रही है। इस प्रकार, पोल्ट्री क्षेत्र न केवल पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करता है, बल्कि रोजगार और आय सृजन में भी राष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत में कुल अंडा उत्पादन में योगदान कमर्शियल पोल्ट्री 125 बिलियन (84.49%) तथा बैकयार्ड पोल्ट्री 23.31 बिलियन (15.1%) हैं। इसलिये हमें बैकयार्ड पोल्ट्री के योगदान को और बढ़ाने की आवश्यकता है।

सरकारी योजनाएँ

भारत सरकार और राज्य सरकारें पोल्ट्री विकास को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएँ चला रही हैं। इन योजनाओं का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार बढ़ाना और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करना है। राष्ट्रीय पशुधन मिशन के तहत मुर्गी पालन को प्रोत्साहन दिया जाता है और किसानों को प्रशिक्षण व वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। इसके अलावा, पशुपालन अवसंरचना विकास निधि के माध्यम से पोल्ट्री फार्म स्थापित करने के लिए ऋण सुविधा उपलब्ध कराई जाती है। कई राज्यों में बैकयार्ड पोल्ट्री योजना भी चलाई जा रही है, जिसके तहत गरीब और भूमिहीन परिवारों को मुर्गियां वितरित की जाती हैं। इन योजनाओं से ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत हो रही है और लोगों की आय में वृद्धि हो रही है। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा कुक्कुट विकास नीति 2022 लागू की गई। बुंदेलखंड क्षेत्र में विशेष बैकयार्ड पोल्ट्री योजना संचालित की जाती हैं।

उद्देश्य

सरकारी योजनाओं का उद्देश्य पोल्ट्री क्षेत्र और बैकयार्ड मुर्गी पालन को बढ़ावा देना है। इनका मुख्य लक्ष्य ग्रामीण और गरीब परिवारों को आजीविका का साधन उपलब्ध कराना है। इसके साथ ही अंडा और मांस उत्पादन बढ़ाकर पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करना भी एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है। इन योजनाओं के माध्यम से किसानों को प्रशिक्षण, तकनीकी जानकारी और वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है ताकि वे कम लागत में मुर्गी पालन कर सकें। साथ ही, ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार सृजन और महिलाओं की आर्थिक भागीदारी को भी प्रोत्साहित किया जाता है। इस प्रकार, सरकारी योजनाओं का उद्देश्य ग्रामीण विकास और पोषण सुधार दोनों को मजबूत करना है।

आवास एवं स्थान की आवश्यकता

बैकयार्ड पोल्ट्री फार्मिंग में आवास एवं स्थान की आवश्यकता बहुत कम होती है, जिससे यह प्रणाली छोटे किसानों के लिए आसान बन जाती है। लगभग 10 मुर्गियों के लिए केवल 15-20 वर्ग फीट स्थान ही पर्याप्त होता है। इसके लिए किसी पक्के या महंगे फर्श की जरूरत नहीं होती, बल्कि कच्चे दड़बे या साधारण कमरे में भी मुर्गियों का पालन आसानी से किया जा सकता है। मुर्गियों को रात के समय सुरक्षित रखने के लिए दड़बे को मजबूत और बंद रखना जरूरी होता है, ताकि उन्हें कुत्ते, लोमड़ी या अन्य शिकारी जानवरों से बचाया जा सके। उचित वेंटिलेशन और साफ-सफाई का ध्यान रखने से मुर्गियां स्वस्थ रहती हैं और अच्छा उत्पादन देती हैं।

दाना एवं पोषण आवश्यकता

बैकयार्ड पोल्ट्री फार्मिंग में दाना और पोषण की आवश्यकता बहुत महत्वपूर्ण होती है क्योंकि यह मुर्गियों के स्वास्थ्य और उत्पादन को सीधे प्रभावित करती है। एक वयस्क मुर्गी को प्रतिदिन लगभग 100-150 ग्राम दाना की आवश्यकता होती है ताकि उसका

सही विकास और अंडा उत्पादन बना रहे। इस प्रकार, 10 मुर्गियों के लिए प्रतिदिन लगभग 1-1.5 किलोग्राम दाना पर्याप्त होता है। यदि पूरे महीने (30 दिन) का हिसाब लगाया जाए, तो लगभग 33 किलोग्राम दाने की आवश्यकता होती है। इसके साथ-साथ मुर्गियों को स्वच्छ पानी, हरे चारे और घरेलू बचे हुए भोजन भी दिए जा सकते हैं, जिससे उनका पोषण संतुलित रहता है और लागत भी कम हो जाती है।

पोल्ट्री खाद का महत्व

पोल्ट्री खाद, विशेषकर मुर्गियों की बीट, कृषि के लिए अत्यंत मूल्यवान मानी जाती है। इसमें उच्च मात्रा में पोषक तत्व पाए जाते हैं जो मिट्टी की उर्वरता को बढ़ाते हैं। मुर्गी की बीट में लगभग 3.93% नाइट्रोजन होता है, जो पौधों की वृद्धि और हरी पत्तियों के विकास में सहायक है। इसके अलावा इसमें 2.08% फास्फोरस पाया जाता है, जो जड़ों के विकास और फूल-फल बनने की प्रक्रिया को मजबूत करता है। साथ ही इसमें लगभग 4.78% पोटाश होता है, जो पौधों को रोगों के प्रति प्रतिरोधक क्षमता प्रदान करता है और गुणवत्ता सुधारता है। इस प्रकार पोल्ट्री खाद एक प्राकृतिक, सस्ती और प्रभावी जैविक खाद है, जो फसलों की पैदावार बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। पोल्ट्री खाद के कई महत्वपूर्ण लाभ होते हैं, जो इसे खेती के लिए बहुत उपयोगी बनाते हैं। यह कंपोस्ट खाद की तुलना में अधिक पोषक तत्वों से भरपूर होती है, जिससे फसलों को बेहतर विकास के लिए आवश्यक पोषण मिलता है। यह खेतों के लिए एक उत्तम कार्बनिक (जैविक) खाद के रूप में काम करती है, जो मिट्टी की गुणवत्ता और उर्वरता को सुधारती है। इसके उपयोग से मिट्टी की संरचना भी बेहतर होती है और जल धारण क्षमता बढ़ती है। पोल्ट्री खाद में मौजूद पोषक तत्व जल्दी घुलनशील होते हैं, जिससे वे पौधों को शीघ्र उपलब्ध हो जाते हैं और फसलों की वृद्धि तेजी से होती है।

बैंकिंग लाभ

बैकयार्ड पोल्ट्री फार्मिंग के कई पर्यावरणीय लाभ हैं। इसमें मुर्गियों के उपयोग से खेतों में मौजूद कीड़े-मकोड़े प्राकृतिक रूप से नियंत्रित हो जाते हैं, जिससे रासायनिक कीटनाशकों का उपयोग कम करना पड़ता है। इससे पर्यावरण पर हानिकारक प्रभाव घटता है। मुर्गी की बीट से प्राप्त खाद मिट्टी की उर्वरता बढ़ाती है और मृदा संरक्षण में मदद करती है, जिससे भूमि लंबे समय तक उपजाऊ बनी रहती है। यह प्रणाली जैविक और प्राकृतिक खेती को भी बढ़ावा देती है क्योंकि इसमें रसायनों के बजाय प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग होता है। इस प्रकार, बैकयार्ड पोल्ट्री पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

निष्कर्ष

बैकयार्ड पोल्ट्री पालन भूमिहीन, लघु एवं सीमांत किसानों तथा कम आय वाले परिवारों के लिए आय एवं पोषण का उत्कृष्ट साधन है। यह कम लागत, कम स्थान और कम संसाधनों में अपनाया जा सकता है। बैकयार्ड पोल्ट्री द्वारा ग्रामीण परिवार आत्मनिर्भर बन सकते हैं तथा पोषण सुरक्षा एवं आर्थिक सशक्तिकरण प्राप्त कर सकते हैं। इसके माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर भी बढ़ते हैं और महिलाओं की भागीदारी को भी प्रोत्साहन मिलता है। यह प्रणाली पर्यावरण के अनुकूल होने के साथ-साथ जैविक खेती को भी बढ़ावा देती है। भविष्य में यदि उचित प्रशिक्षण और सरकारी सहयोग मिले तो यह ग्रामीण विकास में और अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।